दिव्य अनुभव की अर्हता प्राप्त करने की शर्त शरणागती है, जिसे हिंदू और इस्लाम दोनों में स्वीकार किया जाता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

शरणागती करना यह स्वीकार करना है कि मरम्मत आत्मा की क्षमता से परे है और बागडोर भगवान को सौंप दी जाती है। यह कुछ हद तक रोगी के आत्मशरणागती के समान है। यह महसूस करते हुए कि इलाज करना हमारी क्षमता से परे है, रोगी डाक्टर जैसा कहता है वैसा करता है। दवाई जैसे खाने को कही जाती है वैसे खाता है। उसमें अपनी बुद्धी का प्रयोग नही करता। डाक्टर जो भी परहेज बताता है उस स्वीकार करता है - शब्दशः और बिना किसी प्रश्न के।

इस प्रकार आत्मशरणागती करना बिना किसी संदेह या प्रश्न के भगवान के आदेश को शब्दशः स्वीकार करना है।

भगवान के मुकाबले संत के की शरणागती करना आसान है। संत या गुरु वह व्यक्ति है जिसने दिव्य सुख प्राप्त किया है। फिर वह दूसरों को वो अनंत सुख दे सकता है जो उसने प्राप्त किया है। आप संत को देख सकते हैं लेकिन भगवान को नहीं। भगवान आपके साथ सीधे बात नहीं कर सकते, संत भगवान के साथ और आपके साथ सीधे बात कर सकते हैं। संत सिद्धांत समझाते हैं, संदेह दूर करते हैं, ईश्वर नहीं। अनगिनत आत्माओं ने संत के माध्यम से दिव्य सुख प्राप्त किया है। बस यह सुनिश्चित करना परमावश्यक कि संत वास्तविक है, न की केवल दिखावा है। ये कैसे सुनिश्चित करे, इसके बारे में आगे विचार करेंगे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

ईश्वर के प्रति शरणागती और धर्म के प्रति शरणागती में अंतर है। ईश्वर के लिए शरणागती आपको ईश्वर के निवास में ले जाती है जबकि धर्म के प्रति शरणागती आपको स्वर्ग में ले जाती है। दिन के व्यवहार के बारे में धर्म के अनुसार कर्मकांड कर के स्वर्ग या जन्नत जाने की कोशिश करना ये मूर्ख लोगों की पसंद है। क्योंकि स्वर्ग बहुत हद तक अति विषयों के भोग करने वाली रईस जीवन शैली के समान है, जो कि ईर्ष्या, घृणा, क्रोध और इत्यादि मन की परेशानियों से भरा है।

ईश्वर और केवल ईश्वर के निरंतर स्मरण से ईश्वर की शरणागती हो सकती है। दैनिक अनुष्ठानों, कपड़ों का इससे कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में, कृष्ण कहते हैं, 'सभी धर्मों को खारिज करते हुए, मेरी और केवल मेरी ही शरण में आओ।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

धर्म को आमतौर पर दो पहलुओं में विभाजित किया जाता है, एक समाज से संबंधित और दूसरा अनंत सुख प्राप्त करने से संबंधित। पहला शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए ड्रेस कोड, व्यवहार संबंधी मानदंडों से संबंधित है। अन्य एक भगवान की पूजा से संबंधित है। बाहरी गतिविधियाँ तब तक एक भौतिक कवायद होगी जब तक कि ईश्वर का स्मरण नहीं होगा।

फिर अप्रासंगिक सामाजिक मानदंडों पर टिके रहना बेवकूफी होगी। यह बोतल को संरक्षित करने और अंदर का अमृत फेक देने जैसा है जैसा कि कई बार होता है और धर्म अपना शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का उद्देश्य खो देता है। बाहरी दिखावे से कोई फर्क नहीं पड़ता है, जो मायने रखता है, वो है भगवान के साथ दिल को व्यस्त रखना।